आओ बनाएँ लिट्टी–चोखा

लिट्टी–चोखा का नाम सुनते ही मुँह में पानी आ जाता है। अपने यहाँ लिट्टी–चोखा कई तरह से बनाया जाता है।

सामग्री आटा चार कप, चना सत्तु एक कप, अजवाइन, मंगरैला, नींबू, प्याज, लहसुन, हरी मिर्च, सरसो का तेल और नमक, हरी धनिया पत्ती, गोल मिर्च, अदरक, घी आदि।

सबसे पहले आटा लेकर उसे गूँधें। यह ध्यान रखें कि गूँधा आटा कड़ा हो। अलग से लिट्टी में भरने के लिए भरावन तेयार करें। भरावन के लिए सत्तु में अजवाइन, मंगरैला, नींबू, हरी मिर्च, लहसुन, प्याज, सरसों का तेल, नमक आदि स्वादानुसार मिलाएँ।

आटे की छोटी–छोटी लोई काटकर उसमें सत्तु का भरावन भरें। अब लिट्टी सेके जाने के लिए तैयार है। उपलों को सुलगाएँ। उपले जब पूरी तरह से जलने लगे तो उसे फैलाकर बराबर करें और उसके ऊपर भरी हुई लिट्टियां को सेकें। लिट्टियों को पलटते रहें। ऐसा न हो कि वे किसी तरफ जल जाए। जब लिट्टियाँ भली–भाँति सिक जायेंगी तो वो फटना शुरू कर देंगी। फटी हुई लिट्टियों को उपले से अलग कर लें और एक कपड़े में रखकर उसमें लगे ... नें और घी लगा दें। अब लिट्टी खाने के लिए तैयार हो गई।

ed by: SOL www.absol.in

चोखा के लिए आलू, बैंगन एवं टमाटर को अलग से पकायें। पक जाने के बाद छिलकों को उतारकर उसे गूँधें तथा उसमें सरसों का तेल, लहसुन, काली मिर्च, अदरक, नमक आदि मिलायें। अब दोस्तों के साथ लिट्टी–चोखा मजे लेकर खाएँ।

सावधानी– लिट्टी–चोखा बनाने का काम बड़ों देख–रेख में करें।

WEBCOPY BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

अध्याय—11

जन्तु—जगत : सुरक्षा और संरक्षण

एक कहानी :

सिद्धार्थ बगीचे में रंग—बिरंगे फूलों और पक्षियों को देखकर खुश हो रहा था। अचानक एक हंरा उराके रामने आ गिरा। उरो एक तीर लगा था और उराके शरीर रो खून बह रहा था। घायल हंस को सिद्धार्थ ने धीरे से उठा लिया।

सिद्धार्थ ने उसके शरीर से तीर निकाल दिया और उसके घाव को पानी से धोया। उराने अपने कपड़े को फाड़कर हंरा के घाव पर मरहम पट्टी की।

उरी बीच उराका चचेरा भाई देवदत्त तीर—धनुष लिए आ धमका। देवदत्त ने कहा, "तुम मेरे हंस को छोड़ दो। यह हंस मुझे दे दो। मैंने उसे तीर से गिराया है।" सिद्धार्थ ने देवदत्त को हंरा दने रा इंकार कर दिया।

रिद्धार्थ ने कहा, "ऐरा करो हम लोग राज दरबार में चलते हैं, वहीं इराका फैराला हो जायेगा।" देवदत्त ने कहा, "चलो राज दरबार, हंस तो मेरा ही है, फेसला मेरे हक में ही होगा।"

आप बताइए कि यह हंस किसे मिलना चाहिए और क्यों?

____

____

सिद्धार्थ राज दरबार में हंरा लिए पहुँचा और देवदत्त तीर—धनुष लिए।

राजा ने पूछा, "क्या बात है? तुम लोग यहाँ क्यों आए हो?"

देवदत्त ने कहा, "रिद्धार्थ ने मेरा हंरा ले लिया है। मैंने इरो तीर मार कर गिराया था।"

रिद्धार्थ ने कहा, "महाराज! मैंने घायल पड़े हंरा को बचाया है।"

गहाराज शुद्धोदन ने कहा, "प्रश्न यह है कि किरी की जान बचाना अच्छा है या जान लेना।"

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

Developed by: ABSOL www.absol.in

मंत्रीगण एक स्वर में बोले, "जान बचाना।"

महाराज ने न्याय किया, "सिद्धार्थ ने हंस की जान बचायी है, इसलिए हंस सिद्धार्थ को दे दिया जाय।"

सिद्धार्थ और देवदत्त में से कौन महान् था और क्यों?

क्या आपने कभी किसी जन्तु को मदद पहुँचाया है? कैसे?

जन्तु आधारित जीविका

कुछ लोग जीव जन्तुओं को मारकर अपनी जीविका चलाते हैं। जैसे मछुआरा मछली मारता है। क्या ऐसा करना उचित है? अपना विचार लिखिए।

सँपेरा अपनी जीविका चलाने के लिए क्या करता है?

WEBCOPY BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

_____

क्या उसे ऐसा करना चाहिए?

_____

_____

हमने देखा कि साँपेरा साँप को पालकर अपनी जीविका चलाता है। क्या आप भी किसी पशु/पक्षी को पालते हैं? उसका रख रखाव कैसे करते हैं?

_____

_____

_____

_____

जिन जन्तुओं को पाला जाता है उनकी सूची बनाइए।

_____

_____

_____

जन्तुओं को क्यों पाला जाता है? अपने साथियों से चर्चा करके तालिका में जानकारी भरिए।

जन्तु का नाम	पालने का कारण
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____
_____	_____

© BSMBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

बबली ने पाला तोता

बबली ने एक तोता पाला है। उसने उसका नाम सुगनी रखा। वह उसे एक सुंदर पिंजड़े में रखती है। वह उसे प्रतिदिन खाने के लिए दाना पानी देती है। सुगनी बबली की बातों को दुहराकर सबका मन बहलाती है। बबली को यह सब अच्छा लगता है। बबली जब स्कूल से पढ़कर आती है तो सुगनी शोर मचाने लगती है, "बबली आ गई। बबली आ गई।" अचानक एक दिन सुगनी बीमार पड़ी। खाना बन्द, शोर मचाना बन्द। बिल्कुल सुस्त पड़ी रहती। बबली उसे जानवरों के डॉक्टर के पास ले गई। डॉक्टर ने दवा दी पर साथ ही कहा कि सुगनी को पिंजड़े से निकालकर खुले आसमान में छोड़ देना चाहिए।

डॉक्टर ने सुगनी को आजाद करने के लिए क्या कहा होगा?

_____

_____

क्या आपको ऐसा लगता है कि सुगनी को पिंजड़े से आजाद कर देना चाहिए? क्यों?

_____

_____

आपके पालतू जानवर जब बीमार पड़ते हैं तब आप क्या करते हो?

_____

_____

हम अपनी जरूरतों के लिए जन्तुओं को पालते हैं। ऐसे जानवरों की हम देखभाल भी करते हैं। मगर पालतू जानवरों के अलावा भी कई जीव जन्तु हैं। ऐसे जीव जन्तुओं की हमारे लिए क्या उपयोगिता है? आइए विचार करें।

हिरण पौधा खाता है और बाघ हिरण को, बाघ खत्म हो गए तो हिरणों की संख्या बढ़ जाएगी और पौधे

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अब आप बताइए–

जानवरों की सुरक्षा क्यों करनी चाहिए?

____

____

____

जानवरों की सुरक्षा कैसे करनी चाहिए?

____

____

____

जंगली जानवरों की सुरक्षा के लिए कई **जंगलों** के विशेष **हिस्सों को** सरकार ने लोगों के दखल से बचाया है और उन्हें **'अभयारण्य' का रूप दिया है**। ऐसे अभयारण्य बिहार में पश्चिम चम्पारण तथा बेगुसराय में हैं।

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

तेंदुआ

गुलाबी सिर वाला बत्तख

जंगल में तरह–तरह के जीव जन्तु पाए जाते हैं जो भोजन या आवास आदि के लिए एक दूसरे पर निर्भर हैं। जंगल जैसे–जैसे खत्म किए जा रहे हैं वैसे–वैसे वहाँ के जीव–जन्तु भी कम होते जा रहे हैं। कई जीव–जन्तु जो कभी हमारे जंगलों में पाए जाते थे आज नहीं हैं या उनकी संख्या बहुत कम हो चुकी है। उदाहरण के लिए तेंदुआ और गुलाबी सिरवाला बत्तख जंगलों से लगभग खत्म हो गए हैं।

आपके आरा–पारा कौन–कौन रो जन्तु दिखते हैं? उनकी सूची बनाइए। (अपने शिक्षक, दादा–दादी, माँ–बाबूजी रो पूछकर)

_____ _____

इस सूची में किस जन्तु को आपने बहुत कम बार देखा है? ऐसा क्यों है?

_____

_____

ऐसे जानवरों के लिए आप क्या करना चाहेंगे?

_____

_____

_____

जरा सोचिए

अगर धरती से सारे जानवर **खत्म हो गए तो क्या होगा?**

_____

_____

क्या आप जानते हैं?

आपने खेजड़ली गाँव की अमृता की कहानी पढ़ी होगी। वह विश्नोई समुदाय की थी। विश्नोई समुदाय के लोग परम्परागत रूप से जीव जन्तुओं का संरक्षण करते हैं।

विश्नोई राजस्थान की एक जनजाति है। विश्नोई का अर्थ होता है– उनतीस। उनके गुरु जम्भाजी के कहे अनुसार विश्नोई लोगों ने 29 बातों को अपनाया जिनमें जीव–जन्तुओं की देखभाल करना प्रमुख था। ये प्रकृति–प्रेमी होते हैं। वन तथा वन्य प्राणियों की रक्षा करते–करते ये अपनी जान तक दे देते हैं। ये जलावन के लिए हरे–भरे पेड़ों को काटकर इस्तेमाल में नहीं लाते हैं। सिर्फ सूखे घास या सूखी लकड़ी का जलावन के लिए इस्तेमाल करते हैं। इनके इलाके में कई जानवर जैसे– चिंकारा (धारीदार हिरण), साँभर तथा काले साँड़ आजाद घूमते देखे जा सकते हैं। विश्नोई लोग जन्तुओं का न शिकार करते हैं और न करने देते हैं।

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

अध्याय–12

मान गए लोहा

सुखदा और संजय तेजी से विद्यालय की ओर जा रहे थे।

"दीदी वो देखो! हमारे विद्यालय की दीवार पर बच्चे कुछ पढ़ रहे हैं", संजय ने सुखदा से कहा। हाँ, चलो दोनों दौड़कर छात्रों के बीच पहुँच गए।

विद्यालय की दीवार पर लगे पोस्टर को सभी बच्चे पढ़कर आपस में बात कर रहे थे।

तभी शिक्षक भी वहाँ पहुँच गए। चलो बच्चों, अपनी–अपनी कक्षाओं में चलो। आप राबको कक्षा में इसके बारे में बताया जाएगा।

कक्षा में शिक्षक ने सभी बच्चों से पूछा– "आपको इस पोस्टर को पढ़कर क्या सूचना मिलती है?

नरेश ने बताया ऐसे व्यक्ति जिन्हें देखने, सुनने, बोलने, चलने आदि में कठिनाई होती है, उनके लिए विश्व विकलांगता दिवस पर विशेष कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है।

सुखदा बोली–" कुछ लोगों में ऐसी कठिनाई क्यों होती है?"

शिक्षक ने बताया– "कभी–कभी दुर्घटना या बीमारी के कारण कुछ लोगों के शारीरिक बनावट मे भिन्नता उत्पन्न हो जाती है। कभी कभी कुछ शारीरिक भिन्नता जन्मजात भी होती है। इन भिन्नताओं के बावजूद ऐसे व्यक्ति हमारी तरह न केवल अपने सारे दैनिक कार्य करते हैं, बल्कि कई ऐसे कार्य भी कर सकते हैं, जो हम नहीं कर सकते हैं।"

WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

आरथा ने कहा– "हाँ, मैंने भी अखबार में हाथों से निःशक्त एक लड़की को पैरों की अँगुलियों से कलम पकड़कर लिखते हुए का फोटो देखा था। उसने पैर से लिखते हुए बोर्ड की परीक्षा दी व पास हुई।"

शिक्षक ने बताया– "मैं पहले नेत्रहीन बच्चों के विद्यालय में पढ़ाता था। वहां के बच्चों ने विद्यालय के वार्षिक उत्सव पर शिक्षक की मदद से एक नाटक प्रस्तुत किया था। सभी ने उसे बहुत सराहा था।"

शारीरिक बनावट में भिन्नता के बावजूद लोग क्या क्या कर लेते हैं? **लिखिए**

_____

_____

_____

सोचकर लिखिए कि वे **लोग यह सब कैसे कर पाते** होंगे?

_____

_____

रोज़ की तरह **रात के खाने** के बाद सुखदा और संजय दादाजी के पास पहुँचे और विद्यालय की **बातें बताने लगे**। दादाजी ने सभी बातें बड़े ध्यान से सुनीं और कहा– "**कल रविवार है मैं आप लोगों** को नेत्रहीन आवासीय विद्यालय ले चलूँगा।"

दूसरे दिन सुखदा और संजय, दादाजी के साथ राजकीय नेत्रहीन आवासीय विद्यालय गए। विद्यालय के प्रधानाध्यापक महोदय एक शिक्षक के साथ आए और सबका अभिवादन किया। सुखदा ने देखा प्रधानाध्यापक काला चश्मा लगाए थे। हाथों में लाल एवं सफेद रंग की छड़ी थी।

प्रधानाध्यापक– "आइए, हम सबसे पहले छात्रावास चलें।"

सुखदा और संजय सोच रहे थे पता नहीं नेत्रहीन बच्चे कैसे रहते होंगे?

© RSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

3 दिसम्बर को विश्व विकलांगता दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में शिक्षकों के साथ सुखदा, संजय व विद्यालय के सभी बच्चे पहुँचे। नगर भवन में लगी कुर्सियों पर विभिन्न प्रकार के शारीरिक चुनौतियोंवाले व्यक्ति बैठे थे । दीवारों पर विभिन्न प्रकार के पोस्टर व बैनर लगे थे। इन पर समाज कल्याण विभाग के द्वारा निःशक्त व्यक्तियों एवं छात्र–छात्राओं के लिए चलाए जा रहे कार्यक्रमों की जानकारी दी गई थी। छात्र–छात्राओं को दी जानेवाली सुविधाओं के बारे में भी जानकारियाँ थीं।

विश्व विकलांगता दिवस के अवसर पर शारीरिक चुनौती वाले व्यक्तियों के लिए विभिन्न प्रकार की खेल प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। प्रतिभागियों ने बड़े उत्साह से भाग लिया। पोलियोग्रस्त इकबाल अहमद ने सबसे ज्यादा पुरस्कार जीते। उसके चेहरे से आत्मविश्वास और खुशी झलक रही थी।

मंच से उतरते ही बच्चों ने इकबाल को घेर लिया। सुखदा ने उससे हाथ मिलाते हुए कहा भैया, मान गए आपका लोहा!

सुखदा ने इकबाल अहमद को ऐसा क्यों कहा, "भैया, मान गए आपका लोहा?"

लोहा मानना– कठिन से कठिन काम कर पाने की क्षमता को मानना।

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

छात्रावास में सभी छात्र अपने–अपने काम में लगे थे। कुछ कपड़े धो रहे थे। कुछ सामान्य लोगों की तरह स्नानघर और अपने कमरे की ओर आ जा रहे थे। छात्रावास में उनके बिस्तर, पुस्तकें आदि ढंग से सजे थे।

संजय ने पूछा, "ये गीत–संगीत की आवाज़ कहाँ से आ रही है?" प्रधानाध्यापक ने बताया कि यह आवाज संगीत कक्ष से आ रही है। हम वहीं चल रहे हैं।

संगीत कक्ष में 8–10 बच्चे तबले, हारमोनियम आदि पर गा बजा रहे थे।

प्रधानाध्यापक– "वैसे तो इस विद्यालय के प्रायः सभी विद्यार्थी गीत–संगीत में रुचि रखते हैं। परन्तु कुछ विद्यार्थी तो गायन–वादन में बड़े निपुण हैं। उन्होंने जिला और राज्य स्तर पर कई पुरस्कार जीत हैं।"

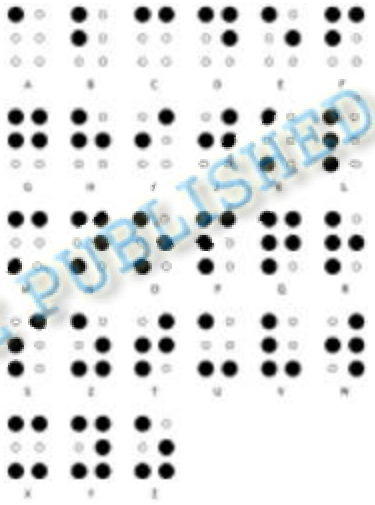

एक दूसरे कमरे के ऊपर पुस्तकालय का बोर्ड लगा था। वहाँ मोटी–मोटी पुस्तकें सजा कर रखी थीं।

दादाजी– "देखो, सुखदा ये पुस्तकें ब्रेल–लिपि में लिखी हैं। ब्रेल–लिपि एक खड़े आयताकार स्लेट में छः बिन्दुओं को उभारकर लिखा जाता है। नेत्रहीन बच्चे इन उभरे बिन्दुओं को अँगुलियों के स्पर्श से समझ जाते हैं।"

सुखदा और संजय यह सब जानकर बड़े प्रभावित हुए।

नेत्रहीन बच्चे छात्रावास में क्या–क्या कर रहे थे?

_____

_____

_____

नेत्रहीन बच्चे कैसे पढ़ते हैं?

_____

_____

आँख: पक्षी की आँखें क्या गोल लकीर से पूरी घिरी हैं? या केवल आँखों के ऊपर ही लकीर है? आँखों का रंग कैसा है?

चोंच: चोंच कैसी है – लंबी, छोटी, नुकीली या मुड़ी हुई?

पूँछ: पूँछ की लंबाई? पूँछ का सिरा नुकीला है, गोलाकार है या चौकोर? क्या पक्षी पूँछ हिलाता रहता है? क्या वह पूँछ खड़ी करता है या नीचे ही रखता है?

पंख: पंख गोलाकार हैं या नुकीले? इसके लिए उड़ते हुए पक्षियों को देखना जरूरी होगा। संभव हो तो फैले हुए पंखों का चित्र भी बनाइए।

आवाज: पक्षी की आवाज ध्यान से सुनिए। आवाज की मदद से आप पक्षियों को जल्दी पहचान सकते हैं। अगर हो सके तो उसकी आवाज की नकल करने की कोशिश भी कर सकते हैं।

आवास: वह अक्सर कहाँ दिखाई देता है – खेत में, पानी के पास, पेड़ पर, झाड़ियों में या फिर बिजली के तारों पर? क्या पक्षी किन्हीं खास पेड़ों पर ही बैठता है?

भोजन: पक्षी क्या खाता है– कीड़े–मकोड़े, दाने, मांस, अनाज या फल?

मौसम: अक्सर किस मौसम में आपको वह पक्षी दिखाई देता है?

पक्षियों को ध्यान से देखने और उनके अवलोकन अपनी डायरी में नोट करने में आपको मदद मिले इसके लिए उदाहरण के तौर पर खंजन पक्षी का विवरण आगे दिया है।

खंजन

लंबाई : लगभग 21 से.मी. (गौरैया से थोड़ी बड़ी)

रंग: पीठ और सिर का रंग नर में काला और मादा में धूसर। पेटवाला भाग सफेद। पूँछ के बीच में काली पट्टी और दोनों किनारों पर सफेद पट्टी। आँखों के ऊपर सफेद भौंह जैसी पट्टी।

पूँछ: लंबी, पतली, आयताकार।

चोंच: छोटी, पतली, नुकीली।

© NCERT WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

खेल–खेल में

पक्षियों से दोस्ती

पक्षी तो हर जगह दिखाई देते हैं। क्या आपने कभी इनको ध्यान से देखा है?

पक्षियों को देखना, पहचानना तथा उनका अवलोकन करना बहुत ही दिलचस्प अनुभव है। पक्षियों के बारे में देखने को बहुत कुछ है। जैसे– आकार, रंग–रूप, बोली, आदतें, भोजन आदि। कई लोग इस एक शौक के रूप में अपनाते हैं। इस शौक को पक्षी की दुनिया में ताक–झाँक या 'बर्ड वाचिंग' कहते हैं।

पक्षी दर्शन के लिए आप एक अलग डायरी या कॉपी बना सकते हैं। हर पक्षी के लिए एक अलग पन्ना रखना अच्छा रहेगा। आपको पक्षी के बारे में जो भी जानकारी मिले या पता चले उसको इस पन्ने पर लिखते जाइए।

पन्ने पर सबसे ऊपर पक्षी का नाम लिखिए। यदि संभव हो, तो पक्षी का चित्र ढूँढकर अपने द्वारा इकट्ठी की गई जानकारी के साथ चिपका दीजिए। अगर ऐसा नहीं कर पाते हैं तो, चित्र बनाने की कोशिश कीजिए।

पक्षियों के अवलोकन में मदद के लिए कुछ ओर सुझाव निम्नलिखित हैं :

लंबाई: पक्षी लगभग कितना लंबा है? पक्षियों की लंबाई की तुलना गौरैया या कौए किसी जाने–पहचाने पक्षी से की जा सकती है।

रंग: क्या पक्षी का पूरा शरीर एक ही रंग का है? सीना सादा है या धब्बेदार, या फिर चित्तियोंवाला? क्या पूँछ पर भी चित्तियाँ हैं? पंख एक ही रंग के हैं या उन पर भी चित्तियाँ हैं?

WEBCOPY © BSTBPC NOT TO BE PUBLISHED

अध्याय–13

पानी और हम

पर्यावरण अध्ययन की कक्षा में शिक्षक बच्चों को 'पानी' के बारे में पढ़ा रहे थे। उन्होंने बच्चों से पूछा कि उनके घर में दैनिक जीवन के इस्तेमाल के लिए पानी कहाँ से आता है?

कहाँ–कहाँ से आता पानी, सुनिए बच्चों की अपनी जुबानी।

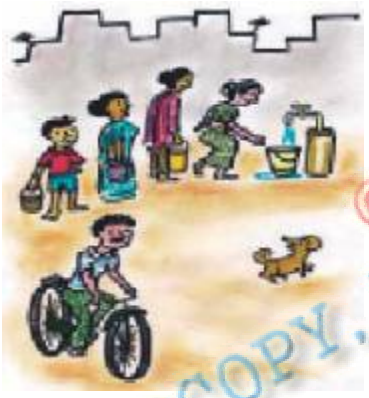

मयंक	रीमा	मैरी
"हमारे मोहल्ले में दिन में दो बार नल में पानी आता है। पानी के लिए सार्वजनिक नल पर लम्बी लाइन लगती है और कभी–कभी झगड़े भी हो जाते हैं।"	"हम कुएँ से पानी भरते थे। पास के कुएँ एक साल पहले सूख गए थे। अब काफी दूर चलकर जाना पड़ता है।"	"हमारे यहाँ तो दिनभर पानी आता है।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

आवाजः पतले स्वर में ट्जीट–ट्जीट। कई तरह की सीटी जैसी मधुर बोलियाँ बोलता है। प्रजनन काल में नर सुरीला गीत गाता रहता है।

भोजनः कीड़े मकोड़े।

आवासः मुख्यतः जमीन पर। आम तौर पर नदी के किनारे या किसी तालाब या पानी से भरे खत के किनार बैठा देखा जा सकता है।

अन्य जानकारीः अधिकतर जोड़ी में दिखता है। वैसे कभी–कभी छोटे झुंडों में भोजन करते हुए भी देखा जाता है। नहाते समय पूँछ को ऊपर नीचे करता है। पानी के किनारे बैठकर लगातार पूँछ हिलाते हुए भोजन करता है।

नर और मादा में अंतर रंग के आधार पर किया जा सकता है।

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

रामू	अकरम	सलमा
"मेरे यहाँ हैण्डपम्प लगा है, लेकिन उसका पानी काफी खारा है, कपड़े साफ नहीं होते हैं फिर भी हम पीते हैं।"	"मेरे यहाँ दिन में आधे घंटे के लिए **पानी** आता है। **हम लोग दिनभर के इस्तेमाल के लिए टंकी में पानी भरकर रखते** है।"	"हम **नहर से पानी भरकर लाते हैं**।"

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

बताइए—

आपके यहाँ **जिस तरह से** पानी आता है, उस चित्र पर निशान लगाइए। अगर किसी अलग **तरीके से** आता है, तो लिखिए।

____

____

____

इनके अलावा पानी के और स्रोत कौन–कौन से हैं?

____

____

____

मयंक और मैरी के यहाँ जिस तरह से पानी आता है, उसमें क्या अन्तर है? लिखिए।

_____

_____

क्या कभी मैरी को भी मंयक की तरह लम्बी लाइन में खड़े होकर पानी लेना और उसके लिए झगड़ा करना पड़ सकता है? चर्चा करके लिखिए।

_____

हम पानी का उपयोग किन–किन कार्यों को करने के लिए करते हैं?

_____

_____

_____

पानी की उपयोगिता के सम्बन्ध में कक्षा में बड़ी जोरों से चर्चा चल रही थी। सभी बच्चे अपने–अपने अनुभव बाँट रहे थे–

जया– "पानी नहीं होगा तो हम जिन्दा नहीं रह सकते है।"

राहुल– "पानी नहीं होगा तो खेत सूख जाएँगे, फसल नहीं हो पाएगी।"

टीना– "पर राहुल पानी ज्यादा होना भी तो ठीक नहीं है।"

राहुल– "वो कैसे?"

टीना– "एक बार मेरे गाँव में बाढ़ आ गई थी। कई दिन तक बारिश होती रही और नदी का पानी भी गाँव में आ गया था जिसके कारण चारों तरफ पानी ही पानी था। जिन लोगों के कच्चे घर थे व ढह गए थे और बहुत से लोग पानी में बह गए थे। मेरा घर पक्का था और ऊँचाई पर

यदि आपने नहीं देखा है तो पता लगाइए कि आपके इलाके में क्या कभी ऐसी स्थिति उत्पन्न हुई थी?

_____

_____

18 अगस्त 2008 की काली अँधेरी रात थी। पूरे उत्तर बिहार और नेपाल की तराई में दो–तीन दिनों से बारिश हो रही थी। सभी लोग अपने–अपने घरों में सोए हुए थे। अचानक शोर हुआ। बाढ़ आ गई, बाढ़ आ गई। सभी लोग चीखने–चिल्लाने लगे। कुछ लोग भागकर ऊँची जगह तलाशने लगे तो कुछ ने घर की छतों और छप्परों पर अपना ठिकाना बना लिया। वृक्ष पर चढ़कर भी लोगों ने अपनी जान बचाने की कोशिश की। बाढ़ का पानी बढ़ता गया और गाँव के गाँव जलमग्न हो गए।

सुरक्षित स्थान की तलाश में

उत्तर बिहार के पूरे इलाके में जान–माल और सम्पत्ति का काफी नुकसान हुआ। 500 से अधिक लोग काल के गाल में समा गए। 2,36,632 हेक्टेयर में खड़ी फसलें नष्ट हो गईं। 3,00,000 से ज्यादा घर गिर गए। लाखों लोगों को स्कूल, बड़े मकान एवं तटबंध पर शरण लेना पड़ा।

राहत सामग्री का इंतजार

शिविर में भोजन वितरण

था, इसलिए सिर्फ नीचे की मंजिल में पानी भरा था। मेरे मम्मी पापा जैसे तैसे मुझे और मेरे भाई को ऊपर की मंजिल पर ले गए थे। दो दिन तक हमें कुछ भी खाने–पीने का नहीं मिला था। धीरे–धीरे जब पानी कम होने लगा तो लोगों ने हमारी मदद की। हम तक खाना पहुँचाया और हमें वहाँ से निकालकर राहत शिविर में रखा।''

जया– ''बाढ़ आती कैसे है?''

शिक्षक– ''छोटी–छोटी नदियों का जल बड़ी नदियों में जाता है। बड़ी नदियों का पानी सामान्यतः बहकर समुद्र में जाता है। लेकिन कभी–कभी नदी में अत्यधिक पानी आ जाता है और वह किनारों को तोड़कर या फाँदकर चारों ओर फैल जाता है। खेत–खलिहान जलमग्न हो जाते हैं।''

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

चित्र–जलमग्न घर, खेत–खलिहान एवं रेल पटरी

बताइए–

क्या आपने कभी अपने आस–पास ऐसा दृश्य देखा है? अपने अनुभव लिखिए।

____

____

____

मदद की तलाश

बाढ़ में घिरे लोग काफी संकट में थे। लोग सहायता की पुकार करने लगे। पानी कम होने पर टेंट, कपड़े, दवाइयाँ और खाने की सामग्री सहायता के रूप में आने लगी। देश के विभिन्न क्षेत्रों से लोगों ने मदद की। छीना–झपटी भी खूब हुई।

बताइए–

(i) पता करके लिखिए कि 2009 में उत्तर बिहार के किन–किन जिलों में बाढ़ आई?

_____

(ii) वहाँ के लोगों को किस तरह की परेशानियों का सामना करना पड़ा? (ऊपर दिए गए चित्रों की भी मदद ले सकते हैं।)

_____

_____

(iii) परेशानियों से निकलने के लिए क्या–क्या किया गया?

_____

_____

(iv) परेशानियों से निकलने के लिए किस प्रकार की मदद की गई?

_____

_____

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED BSTBC

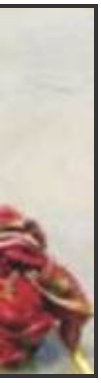

बताइए–

बाढ़ आने से इन सब चीजों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

मकान ——————————————————————————

पेयजल ——————————————————————————

संचार के साधन ——————————————————————————

यातायात

बिजली ——————————————————————————

मवेशी ——————————————————————————

मछुआरा ——————————————————————————

फसलें ——————————————————————————

स्वास्थ्य ——————————————————————————

आपके अनुसार बाढ़ की स्थिति से निपटने के लिए क्या–क्या करना चाहिए?

——————————————————————————

——————————————————————————

——————————————————————————

क्या बाढ़ के कुछ लाभकारी प्रभाव भी हो सकते हैं? अपने साथियों से चर्चा कर लिखिए।

——————————————————————————

——————————————————————————

——————————————————————————

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

सोचिए–

पृथ्वी पर अथाह जल राशि के बावजूद इसकी बहुत कम मात्रा ही हमारे उपयोग के लायक है।

परियोजना कार्य

आप अखबार में से बाढ़ से सम्बन्धित चित्रसहित खबरों को एकत्रित करके अपने शिक्षक की मदद से एक चार्ट पेपर पर चिपकाइए तथा प्रदर्शनी बनाकर कक्षा में लगाइए।

करके देखिए

नीच दिए गए चित्र का 1 से लकर 31 तक विन्दुओं को आपस में मिलाइए और देखिए कि बाढ़ गे बचाव का यह कौन सा साधन है? ———————— इसे सजाइए और रंग भरिए।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

अध्याय–14

सूरज एक काम अनेक

आज दीपाली के गाँव खुटकट में चहल–पहल है। ग्राम पंचायत की ओर से गाँव की गलियों के विभिन्न मोड़ों पर लोहे क खंभे गाड़े जा रहे हैं। लोहे की बादरों से चिपकी बड़ी–बड़ी शीश की पट्टिका खंभ पर लगाई जा रही है। उसी से बल्बों को भी जोड़ा गया है। लोग आपस में बातचीत कर रहे हैं कि अब रात के अँधेरे में बिना बिजली के भी गलियों में रोशनी होगी।

बताइए–

खम्भों पर लगाई जानेवाली पट्टिका से क्या होने वाला है?

_____

_____

_____

ऐसा किस प्रकार हो सकता है, अपने दोस्तों से चर्चा कर अनुमान लगाइए।

_____

_____

_____

दीपाली दौड़ती हुई अपने बाबूजी के पास गई और पूछा "खंभे पर क्या लग रहा है?" बाबूजी न बताया– "जो पट्टिका लग रही है उन्हें सौर पट्टिका कहा जाता है।"

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

दीपाली "ये सौर पट्टिका क्या होती है?"

बाबूजी– "यह तो ठीक से मुझे भी नहीं पता लेकिन इस पर दिन में सूरज की रोशनी पड़ती है तो रात को इससे लगा हुआ बल्ब जल उठता है।"

दीपाली– "दिन में सूरज हमारे कितने काम आता है और अब रात को भी!"

बताइए–

दिन में सूरज हमारे किस–किस काम आता है?

_____

_____

दिन में सूरज के प्रकाश की रोशनी रहती है। रात को रोशनी किस–किस तरह से होती है? अपने दोस्तों से चर्चा करके सूची बनाइए।

_____

_____

_____

_____

आइए कुछ करके देखिए–

(क) किसी बरतन में पानी भरकर धूप में रख दीजिए। 1–2 घंटे के पश्चात् उसे छूकर देखिए।

(ख) आपके विद्यालय में फिसलन पट्टी और झूला लगा है? दोपहर में इस पर बैठकर देखिए।

(ग) विभिन्न प्रकार की चीजों यथा – ईंट, सिक्का, बालू, प्लास्टिक की बोतल, स्टील के गिलास को धूप में रखिए। फिर इन सब चीजों को बारी–बारी से छूकर देखिए।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

दीपाली खुशी से झूमते हुए सबको बता रही थी कि रात को सोर पट्टिका से बल्ब जलेगा। तभी हबीब चाचा ने उसे बुलाया और अपने घर की छत पर ले गए।

छत पर एक चौकोर डिब्बा रखा हुआ था जो अंदर से काला था और उसके ढक्कन पर शीशा लगा हुआ था। शीशे से प्रकाश डिब्बे के काले हिस्से की तरफ पड़ रहा था।

"भला यह क्या है?" दीपाली ने पूछा। हबीब चाचा ने बताया कि यह एक 'सौर कुकर' है। इससे हमारे घर में रोज दाल-चावल बनता है। सूर्य के ताप से इसमें खाना पक जाता है।

दीपाली– "पर यहाँ तो सूर्य का प्रकाश ही पड़ रहा है।"

हबीब चाचा– "सूर्य का प्रकाश तो है ही मगर ताप से ही तो खाना पकेगा।"

बताइए–

सूरज का प्रकाश हमारे क्या काम आता है?

____

सूरज का ताप हमारे क्या-क्या काम आता है?

____

____

"सूरज के ताप और प्रकाश में तो बहुत शक्ति है न, चाचाजी?" दीपाली ने पूछा। हबीब चाचा "हाँ बेटा, सूरज की इस शक्ति को हम कई तरह से प्रयोग में लाते हैं। इसे 'सौर ऊर्जा' कहा जाता है।"

दीपाली को अब एक नया शब्द मिल गया, 'ऊर्जा'। 'सूरज की ताप ऊर्जा' और सूरज की प्रकाश ऊर्जा' कहते हुए वह अपने घर की तरफ चल दी।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

घर पहुँचकर बाबूजी को 'सौर कुकर' के बारे में बताया। बाबूजी– क्यों न हमारे घर में भी ऐसा कुकर लाया जाए?

दीपाली ने 'सौर कुकर' के बारे में क्या बताया होगा? आप सोचकर कम से कम चार बातें लिखिए।

____

____

____

____

दीपाली ने हबीब चाचा के यहाँ देखा था कि 'सौर कुकर' की दीवारें और पेंदी काले रंग से पुती होती हैं। इसका ऊपरी ढक्कन पारदर्शी काँच का होता है। उसमें लगा दर्पण प्रकाश की किरणों को अंदर रखी खाने की चीज़ों पर डालता है। इससे अन्दर रखे एल्युमिनियम के डिब्बों में रखा खाना पक जाता है। उसे समझ में नहीं आ रहा था कि दीवारों और पेंदी को काला क्यों किया हुआ है?

आइए कुछ करके देखिए–

स्टील या एल्यूमिनियम की दो एक समान प्लेट लीजिए। एक को सफेद रंग के कागज से व दूसरी को काले रंग के कागज से ढकिए। अब धूप में दस मिनट के लिए दोनों को रख दीजिए। दस मिनट बाद देखिए कि कौन सी प्लेट ज्यादा गरम हुई? सफेद कागज की जगह और भी रंग के कागज लेकर प्रयोग दोहराइए।

बताइए–

किस रंग के कागज से ढकने पर प्लेट सबसे ज्यादा गरम होती है?

____

____

सौर कूकर की दीवारें और पेंदी को काला रंग क्यों किया होता है?

____

____

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED © BSTBPC

सौर ऊर्जा से छोटी बड़ी बैटरियाँ चार्ज की जाती हैं। मोटर गाड़ियाँ चलाई जा रही हैं। कृत्रिम उपग्रह में भी ऊर्जा प्राप्त करने के लिए इसका उपयोग किया जाता है। अब तो रेलगाड़ी चलाने पर भी विचार किया जा रहा है।

बताइए–

ये ऊर्जा के स्रोत कभी समाप्त हो सकते हैं या नहीं? क्यों?

_____

_____

_____

सौर–ऊर्जा का इस्तेमाल करने से हमें क्या–क्या लाभ है?

_____

_____

सौर–उपकरणों का उपयोग किन दिनों में नहीं हो सकता है? क्यों?

_____

परियोजना कार्य–

'सौर–कुकर' के चित्र को देखकर निम्न सामग्रियों से इसका एक मॉडल बनाइए।

सामग्री–

जूते का डिब्बा, काले रंग का कागज, सिल्वर पेपर, प्लास्टिक, चार छोटे–छोटे एक आकार के डिब्बे, प्लास्टिक किट, कैंची चिपकाने के लिए टेप।

© BSNBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

निकले। हमने साल, शीशम, खैर (कत्था), रोमल, जामुन आदि के पेड़ देखे। अचानक गाड़ी रुक गई। हमने देखा कि बहुत सारे हिरण एक साथ पानी पी रहे थे। सबको बहुत अच्छा लगा। कुछ बच्चों ने तो उनकी तस्वीर भी ली।

अचानक हिरणों के झुंड में हलचल हुई। गाड़ी के ड्राइवर ने हमें शांत रहने का इशारा किया। थोड़ी देर बाद का नज़ारा तो आश्चर्यचकित करनेवाला था। हमने देखा कि झाड़ियों में से अचानक एक बाघ निकला। हम सभी भौंचक्क रह गए। हिरणों का झुंड भी कुछ घबराया–सा था और वे इधर–उधर भागने लगे।

आपको क्या लगता है कि हिरणों के झुंड में हलचल क्यों हुई?

_____

_____

ड्राइवर ने बताया कि इस अभयारण्य में कभी–कभार ही ऐसा नज़ारा देखने को मिलता है। क्योंकि यहाँ बाघों की संख्या बहुत **कम रह गई** है। **थोड़ी देर बाद** हम वहाँ से आगे बढ़े और जंगल में एक ऐसी जगह **जाकर रुके, जहाँ खुला मैदान** था। वहीं बैठकर गुरुजी से बातें करने लगे। हमने **उनसे जंगल के बारे में बहुत** कुछ जाना।

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

अध्याय–15

हमारा जंगल

कल हम वाल्मीकि अभयारण्य जाएँगे। इसके लिए गुरुजी ने हमें कुछ तैयारियाँ करने को कहा है। हम राबने खाने की सामग्री, झोला, पेंसिल, खाली कागज, रबड़, कैंची, रस्सी, रुई, डिटोल आदि की सूची बना ली है। सभी को अलग अलग सामान लाने की जिम्मेदारी दी गई है।

राभी बच्चे कहाँ घूमने जानेवाले है?

_____

_____

उसके लिए उन्होंने क्या–क्या तैयारियाँ की हैं?

_____

_____

अगले दिन सवेरे जल्दी ही हम अभयारण्य के लिए रवाना हो गए। सभी ने बस में बहुत मजे किए। बस में गुरुजी ने बताया कि हम सब अभी वाल्मीकि राष्ट्रीय उद्यान जो एक वन्य जीव अभयारण्य है, देखने जा रहे हैं। यहाँ मुख्य रूप से बाघ का संरक्षण किया गया है। अभयारण्य जंगल का वह हिस्सा है जहाँ जंगली जानवर

बिना किसी खतरे के, खुले घूम सकते हैं। हम उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचाते हुए इसकी सैर भी कर सकते हैं।

अभयारण्य पहुँच कर गुरुजी ने हम सभी को गंदगी नहीं फैलाने तथा जानवरों को परेशान नहीं करने के बारे में समझाया। इसके बाद हम सभी छोटी–छोटी गाड़ियों में बैठकर अभयारण्य घूमने

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

वहाँ रो हमने कुछ पेड़–पौधों की पत्तियाँ, फूल इकट्ठा किए और गुरुजी रो उनके बारे में प्रश्न पूछकर उनके बारे में जाना। लौटते समय भी हमने बहुत सारे जानवर देखे। जैस– बन्दर, खरगोश,साँप, लोमड़ी, अजगर।

अगले दिन कक्षा में जा बच्चे अभयारण्य घूमने क लिए नहीं जा पाए थे उनमें क्या–क्या हुआ जानने की बड़ी उत्सुकता थी।

सीमा ने पूछा– तुम सबने कल वहाँ क्या–क्या देखा?

वीनू ने बताया कि जैसे ही हम वहाँ पहुँचे हमने जंगल देखा। उसके अन्दर जाने पर हमने एक बाघ और हिरण के झुंड को आमने–सामने देखा।

सीमा– जंगल क्या होता है? क्या वह हमार आम के बगीचे जैसा होता है?

तभी गुरुजी बोले– नहीं जंगल में अलग–अलग तरह क पड़–पौधें और तरह–तरह के जीव–जन्तु होते हैं।

बच्चों ने जंगल में क्या–क्या देखा?

_____

_____

कौन सा नजारा था जिसको देखकर सभी दंग रह गए?

_____

_____

जंगल, बगीचे से कैसे अलग है? लिखिए।

जंगल	बगीचा

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED